कुरान की फजीलत और उस्की बरकत

१. कुरान की फजीलत

हुजूरﷺ ने फरमाया तुम्मे सब्से बेहतर वो शख्स हे जो कुरान सीखे और सिखाये. (बुखारी, उस्मान रदी)

सुरे बकरह की आखरी आयत जिसके हर जुमले के जवाब मे अल्लाह फरमाते हे अच्छा मेने दिया मेने कुबूल किया. तरजुमा - ऐ हमारे रब हमारी पकड ना फरमाये अगर हम से भूल हो जाये या हम से गलती हो जाये, ऐ हमारे रब और हम पर कोई सखत हुकम ना भेजिये, जेसा कि हम से पेहले लोगो पर आपने भेजे थे, ऐ हमारे रब हम पर कोई ऐसा बोज ना डालिये जिसके उठाने की हम मे ताकत ना हो और हम को माफ कीजिये और बखश दिज्ये और रेहम कीजिये हम पर और आप हमारे काम बनाने वाले हे तो हमारी मदद कीजिये और गालीब कीजिये हम को काफीरो पर, सही मुस्लिम मे हे कि इस दुवा के जरीये अल्लाह से मागा जाता हे तो हर सवाल पर अल्लाह फरमाते हे, अच्छा मेने दिया मेने कुबूल किया. (तफसीर इबने कसीर २/२३१)

---

२. कुरान से बरकत हासिल करो

कुरान के बारे मे हदीस मे इरशाद फरमाया गया हे, बरकत हासिल करो इस अल्लाह के कलाम से, इसलिये कि ये अल्लाह के अंदर से निकल कर आया

हे, अल्लाह ने कुरान के अल्फाज नाजील फरमाये इन अल्फाज मे वो कमाल छुपे हुवे हे जो बोलने वाले के अंदर थे, और वो कमाल जाहिर होते हे इन अल्फाज के जरीये, दुनिया मे कोई भी जज्बा बगेर लफ्जो के समज मे नही आता, इस लिये लफ्जो को बीच मे लाना जरूरी हे, और इन ही अल्फाज के अंदर अल्लाह ने छुपाया हे अपने कमालो को, और इन ही अल्फाज के जरीये उन कमालो को बंदो तक पोहचाया हे, और उनके दिल मे उतारा हे, उन कमालो को अपने दिल मे हासिल करने की नियत से अगर आप तिलावत करेंगे और इस बात पर ध्यान देंगे कि किया कहा जा रहा हे और मेरे दिल मे वो कमाल किस तरह उतर रहे हे तो फिर और ही शान होगी. इसी हदीस मे कहा गया हे बरकत हासिल करो इस अल्लाह के कलाम से, इसलिये कि ये अल्लाह के अंदर से निकल कर आया हे, बोलने वाला जो बोलता हे वो अंदर से बोलता हे, लफ्ज आड होते हे, ये आसमान चांद सुरज भी अल्लाह की बा-बरकत चीजों मे से हे जिनसे हम फायदा उठा रहे हे लेकिन ये आसमान चांद सुरज अल्लाह के अंदर से निकल कर नही आये हे, अल्लाह ने इनको पेदा किया हे, दुनिया की तमाम चीजे ऐसी ही हे जिनका कोई वजूद नही था, फिर

वो अल्लाह के हुकम से वजूद मे आती हे, अल्लाह के अंदर से निकल कर नही आती, मगर कुरान अंदर से निकल कर आया हे, ये तो कलाम हे इसलिये कुरान से ताल्लुक अल्लाह के अंदर से ताल्लुक हे आप को उपर खेचने के लिये. (खुतबाते हकीमुल इस्लाम)

अल्लाह ने आसमान से नीचे सातो जमीन की तह तक जहन्नुम का इलाका है और सातवे आसमान से ऊपर जन्नत का इलाका है, इसलिये जितनी मखलूक भी आसमान के नीचे हे गोया वो जहन्नम मे है, और अल्लाह का इरशाद है कि इस जहन्नम से जो बचोगे और जन्नत तक पोहचो, उसकी शक्ल ये है कि अल्लाह ने एक रस्सी आसमान से लटकादी और हुकम दिया कि इस रस्सी को मजबूती से पकड लो जब हम खीची तो उसके जरीया हमारे पास आ जावो वो रस्सी किया है, तो हदीस मे हुजूरﷺ का इरशाद है कि ये कुरान अल्लाह की रस्सी है जो आसमान से जमीन की तरफ लटका दी गई है. (जवाहिरे हकीमुल इस्लाम/३१)

---

३. कुरान शरीफ की तिलावत करने वाले अल्लाह के खास लोग हे

हुजुरﷺ ने फरमाया अल्लाह के लिये लोगो मे से

कुछ लोग खास घर वाले हे सहाबा रदी ने अर्ज किया कि वो लोग कौन हे? फरमाया कुरान पढने वाले जो अल्लाह के अहल घर वाले और खास लोग हे. (नसइ, इब्ने मजा, अनस रदी)

हुजुरﷺ ने फरमाया जो शख्स कुरान मजीद की एक आयत सुने उस्के लिये डबल नेकीया लिखी जती हे, और जो तिलावत करे उस्के लिये कयामत के दिन नूर होगा. (अहमद, अबू हुरेरा रदी)

हुजुरﷺ ने फरमाया जिसने कुरान पढा उस्ने उलुमे नुबुव्वत को अपनी पस्लीयो के दरमियान ले लिया, सिवाय इस्के कि इस्की तरफ वही नहि भेजी जती, कुरान वालो के लिये मुनासीब नही कि गुस्सा करने वालो के साथ गुस्सा करे, या जाहिलो के साथ जहालत करे, हालाके इस्के पेट में अल्लाह की किताब हे. (हकिम अब्दील्लाह, इब्ने अम्र रदी)

---

४. कुरान पढने वाले और ना पढने वालो की मिसाल

हुजुरﷺ ने फर्माया जो मुसलमान कुरान पाक पढता हे उस्की मिसाल तुरन्ज के फल जेसी हे कि उस्की खुशबु भी अच्छी होती हे और मजा भी लजीज, और जो मुसलमान कुरान पाक नही पढता हे, उस्की मिसाल खजूर के जेसी हे कि खुशबु कुछ

भी नही और मजा मीठा होता हे, और जो मुनाफिक कुरान पाक नही पढता हे उस्की मिसाल हन्जल के फल जेसी हे कि मजा कडवा हे और खुशबु कुछ भी नही, और जो मुनाफिक कुरान पाक पढता हे, उस्की मिसाल खुशबूदार फूल के जेसी हे कि खुशबु तो अच्छी हे, और मजा कडवा हे. (बुखारी, मुस्लिम, अबू मूसा रदी)

---

५. कुरान की तिलावत की वजह से दूसरी इबादते ना कर सके

जिस शख्स को कुरान को याद करने या जानने और समझने मे इतनी मश्गुली हो कि किसी दूसरी इबादत दुवा वगेरा के मांगने का वकत नही मिलता तो अल्लाह फरमाते हे मे उस्को दुवा मांगने वालो से भी अफजल चीज अता करूगा, और इस चीज का तजरूबा हे कि जब कोइ शख्स मिठाइ बाट रहा हो, और कोइ शख्स उसी के किसी काम मे मशगुल हो और मिठाइ लेने नही आ सके तो यकीनन उस्का हिस्सा पहले ही से निकाल लिया जाता हे. एक दूसरी हदीस मे हे कि मे उस्को शुक्र गुजार बन्दो के सवाब से अफजल सवाब अता करूगा. (तिरमिजी, अबू सइद रदी, रिवायत का खुलासा)

---

६. कुरान अटक कर पढने वालो की फजीलत

हुजूरﷺ ने फरमाया कुरान का माहीर उन फरिश्तो के साथ हे जो नेकी लिखने वाले फरिश्तो के सरदार हे और नेकोरकार हे और जो शख्स कुरान पाक को अटकता हुवा पढता हे और उसे पढने मे मशक्कत उठाता हे उस्के लिये दो गुना सवाब हे. (बुखारी, मुस्लिम, आयशा रदी)

दो गुना सवाब का मतलब ये हे एक सवाब उस्के पढने का, और दूसरा उस्की उस मशक्कत का जो बार बार अटकने की वजह से बरदाश्त करता हे, लेकिन इस्का ये मतलब नही ये उस माहिर से भी बढ जायेगा, बल्की माहिर के लिये जो फजीलत रिवायत नकल की हे कि जो शख्स कुरान पढता हे और वो याद नही होता तो उस्के लिये दो गुना सवाब हे और जो उस्को याद करने की तमन्ना करता रहे, लेकिन याद करने की ताकत नही रखता, मगर वो पढना भी नही छोडता तो अल्लाह उस्का हाफिजो के साथ ही हशर फरमायेंगे.

---

७. तमाम फितनो से नजात कुरान में हे

इब्ने अब्बास रदी केहते हे कि हजरत जिब्रिल(अल) ने हुजुरﷺ को इत्तिला दी कि बहुत से फीतने जाहिर

होंगे, हुजुरﷺ ने पूछा कि उनसे छुटकारे की क्या सुरत हे? उन्होने कहा कि कुरान शरीफ. (रजीन, रहमतुल मुहदात)

हजरत अली(रदी) की रिवायत मे हे कि हजरत यहया(अल) ने बनी इसराइल से कहा कि अल्लाह तआला तुम को अपने कलाम के पढने का हुकम फरमाते हे और उस्की मिसाल ऐसी हे जेसे कोयी कोम अपने किल्ले में मेहफूज हो, और उस्की तरफ कोयी दुश्मन मुतवज्जेह हो कि जिस तरफ से भी हमला करना चाहे उसी तरफ अल्लाह के कलाम को अपनी हिफाजत करने वाला पायेगा, और वो इस दुश्मन को इस्से दुर करेगा.

---

८. कौमो की बुलन्दी और जिल्लत मे कुरान पाक का असर

हुजूरﷺ ने फरमाया अल्लाह इस कुरान पाक की वजह से बहुत से लोगो को बुलन्द मरतबा अता फरमाते हे और बहुत से लोगो को जलील करते हे. (मुस्लिम, उमर बिन खत्ताब रदी)

यानी जो लोग इस पर इमान लाते हे और इस पर अमल करते हे, अल्लाह उन्को दुनिया और आखिरत मे बुलन्दी और इज्जत अता फरमाते हे, और जो लोग इस पर अमल नही करते अल्लाह

उन्को जलील करते हे, सुरे बकरह/२६ की आयत से भी ये बात साबित होती हे; अल्लाह इस्की वजह से बहुत से लोगो को हिदायत फरमाते हे और बहुत से लोगो को गुमराह कर देते हे.

---

९. कुरान मजीद को देखकर पढने की फजीलत

हुजुरﷺ ने फर्माया कुरान शरीफ का हिफ्ज मूह जुबानी पढना हजार दरजा सवाब रखता हे, और कुरान शरीफ मे देखकर पढना दो हजार दरजा तक बढ जाता हे. (बैहकी शुअबुल इमान, ऑस अस्सकफी रदी)

हदीस मे जो देखकर पढने की फजीलत हे वो इस वजह से कि कुरान पाक देखकर पढने मे उस्के मायनो मे गौरो फिक्र के अलावा और बहुत सी इबादते इस्मे जमा हो जाती हे, कुरान पाक को देखना, उस्को छूना, इस्के अलावा देखकर पढने की सुरत मे गलत पढने से भी महफूज रहता हे.

---

१०. कुरान मजीद की सिफारिश

हुजूरﷺ ने फरमाया तीन चीजे कयामत के दिन अर्श के नीचे होगी, एक कुरान पाक कि जगडेगा बन्दो से, कुरान का जाहिर हे और बातिन, दूसरी चीज अमानत हे, और तीसरी चीज रिश्तेदारी जो पुकारेगी जिस्ने मुज्को मिलाया अल्लाह उस्को मिलाये और जिस्ने मुज्को तोडा अल्लाह अपनी

रहमत से उस्को जुदा कर दे. (शरहुस सुन्नाह, अब्दिर रहमान बिन आफ रदी)

कुरान के झगडने का मतलब ये हे की जिन लोगो ने इस्का हक अदा किया, इस पर अमल किया, उन्की तरफ से अल्लाह के दरबार मे जगडेगा, और सिफारिश करेगा, और उनके दरजे बुलन्द करायेगा.

मुल्ला अली कारी(रह) ने तिर्मिजी की एक हदीस नकल की हे कि कुरान पाक अल्लाह के दरबार मे अरज करेगा कि इस्को जोडा अता फरमाये, तो अल्लाह उस्को इज्जत का ताज अता फरमायेगे, फिर वो ज्यादती की दरखास्त करेगा तो अल्लाह उस्को इज्जत का पूरा जोडा अता फरमायेगे, फिर वो दरखास्त करेगा कि या अल्लाह आप इस शख्स से राजी हो जाये, तो अल्लाह इस्से रजामन्दी का इजहार फरमायेगे, और जब कि दुनिया मे मेहबूब की रजामन्दी से बढकर कोयी बडी से बडी नेमत नही होती, तो आखिरत मे हकीकी मेहबूब (अल्लाह) की रजामन्दी का मुकाबला कौनसी नेमत कर सकती हे, और जिन लोगो ने इस्का हक नही अदा किया, उन्से इस्के बारे मे मुतालबा करेगा कि मेरा क्या हक अदा किया?.

११. कुरान हसद के लायक चीज

हुजूरﷺ ने फरमाया हसद दो शख्सो के सिवा किसी पर जाइज नही, एक वो जिसको अल्लाह ने कुरान की तिलावत की तौफीक अता फरमायी, और वो रात दिन उसमे मशगुल रहता हे, दुसरे वो जिसको अल्लाह ने बहुत माल अता फरमाया और वो रात दिन उसको खरच करता हे. (बुखारी)

हसद से मुराद रश्क हे, हसद और रश्क मे फरक ये हे कि हसद मे किसी के पास कोयी नेमत देखकर ये आरजू होती हे कि ये नेमत उसके पास ना रहे, चाहे अपने पास रहे या ना रहे, और रश्क मे सिरफ उस नेमत के मिलने की तमन्ना होती हे, और हसद सब के नजदीक हराम हे इसलिये उलमा ने इसको रश्क के मतलब मे लिया हे, दूसरा मतलब ये हे कि अगर ये मान ले कि हसद जाइज होता तो ये दो चीजे ऐसी थी कि उन्मे हसद जाइज होता.

---

१२. जो दिल कुरान से खाली हे गोया वो वीरान घर हे

हुजूरﷺ ने फरमाया जिस शख्स के दिल मे कुरान मजीद का कोयी हिस्सा भी मेहफूज नही, वो वीरान घर के जेसा हे. (तिरमिजी, अब्दुल्लाह इबने अब्बास रदी)

वीरान घर के साथ मिसाल देने की एक खास वजह

ये हे कि जो घर खाली होता हे उस्पर जिन्नात कब्जा कर लेते हे, इसी तरह जो दिल कुरान शरीफ से खाली होता हे उस्पर भी शैतानो का कब्जा हो जाता हे, इस हदीस मे हिफजे कुरान की किस कदर ताकीद हे कि उस दिल को वीरान घर के साथ मिसाल दी हे, जिसमे कुरान का कुछ भी हिस्सा मेहफूज ना हो, अबू हुरैरा रदी फरमाते हे जिस घर मे कुरान पढा जाता हे उस्के बाल बच्चे ज्यादा हो जाते हे, उसमे खैर व बरकत बढ जाती हे, फरिश्ते उसमे उतरते हे और शैतान उस घर से निकल जाते हे, और जिस घर मे तिलावत नही होती, उसमे तंगी और बे-बरकती होती हे, फरिश्ते उस घर से चले जाते हे, शैतान उस घर मे घुस जाते हे.

---

१३. वो तीन खुसनसीब जो हिसाब किताब से आजाद होंगे

हुजुरﷺ ने फरमाया तीन आदमी ऐसे हे कि उन्को कयामत के खौफ की कोयी परवाह नही होगी, जब तक मख्लुक अपने हिसाब किताब से फारिग होगी वो लोग मुश्क की तेकरीयो पर तफरीह करेगे. एक वो शख्स जिस्ने अल्लाह के वास्ते कुरान शरीफ पढा, और इस तरह इमामत की कि मुक्तदी इस्से राजी रहे. दूसरा वो शख्स जो लोगो को नमाज के

लिये बुलाता हो सिर्फ अल्लाह के वास्ते. तीसरा वो शख्स जो अपने मालिक से भी अच्छा मामला रखे और अपने हाथ नीचे जो लोग हे उन्से भी अच्छा मामला रखे. (तब्रानी, अब्दुल्लाह इब्ने अम्र रदी)

हुजुरﷺ ने फरमाया कयामत के दिन अल्लाह के नजदीक अल्लाह के कलाम से बढकर कोयी सिफारिश करने वाला ना होगा, ना कोयी नबी ना कोयी फरिश्ता. (शरहे एहया, सईदबिन सुलैम रदी)

---

१४. दिलो के काट की सफाइ कुरान की तिलावत से

गुनाहो की ज्यादती और अल्लाह की याद की गफलत की वजह से दिलो पर भी काट लग जाता हे, जेसा कि लोहे को पानी लगने की वजह से काट लग जाता हे, और कुरान पाक की तिलावत और मौत की याद उस्के लीये सफाइ का काम देती हे.

इस्की मिसाल हदीस मे हे कि बन्दा जब कोइ गुनाह करता हे तो एक कला नुकता उस्के दिल मे पड जाता हे, अगर वो सच्ची तौबा कर लेता हे, तो वो नुकता खतम हो जाता हे, और अगर वो दूसरा गुनाह करता हे, तो दूसरा नुकता लग जाता हे, इसी तरह अगर गुनाहो मे पढता रहता हे तो होते-होते इन नुकतो की ज्यादती की वजह से दिल

बिलकुल काला हो जाता हे, फिर इस्के दिल मे खैर की तरफ रगबत और ख्वाहिश बाकी नही रहती हे, बल्कि बुराइ की तरफ ही जाता हे, उसी की तरफ सुरे मुताफ्फीफीन की आयत मे इशारा हे, बेशक उन्के दिलो पर काट जमा दिया उन्के बुरे आमाल ने.

हुजुरﷺ ने फर्माया की मे तुम्मे दो वाइज छोडता हु, एक बोलने वाला और दूसरा खामोश, बोलने वाला कुरान पाक हे और खामोश मौत की याद, हुजुरﷺ का इरशाद दिलो जान से कुबूल हे, मगर वाइज तो उस्के लिये हो जो नसीहत को कुबूल करे, जो नसीहत की जरूरत समजे, लेकिन जो शख्स दीन को बिलकुल बेकार ही समजे, बल्कि इस्से आगे बढकर तरक्की की राह मे रूकावट समजे, वहा नसीहत की जरूरत किसे, और नसीहत क्या फायदा देगी?

हसन बसरी(रह) कहते हे पहले लोग कुरान शरीफ को अल्लाह का फरमान समजते थे, रात भर उस्म गौरो फिक्र करते थे और दिन को उस्पर अमल करते थे, और तुम लोग इस्के जबर जेर को तो बहुत दुरूस्त करते हो, मगर इस्को शाही फरमान नही समज्ते इस्मे गौरो फिक्र नही करते. (बैहकी शुअबुल इमान, अब्दिल्लाह इब्ने उमर, हदीस का खुलासा)

१५. अल्लाह के करीब होने का बेहतरीन जरीया कुरान मजीद हे

हुजुरﷺ ने फरमाया तुम लोग अल्लाह की तरफ रूजु और उस्के यहां नजदीक उस चीज से बढकर किसी चीज से नही कर सकते जो खुद अल्लाह तआला से निकली हे यानी कुरान. (अबु दवुद, अबूजर रदी)

इमाम अहमद बिन हम्बल रह केहते हे मेने अल्लाह तआला की ख्वाब मे जीयारत की तो पुछा सब से बेहतर चीज जिससे आपके दरबार मे नजदीकी हासिल हो क्या चीज हे? इर्शाद हुवा अहमद मेरा कलाम हे, मेने अर्ज किया कि समज कर या बिला समजे इर्शाद हुवा कि समज कर पढे या बिला समजे दोनो तरह से अल्लाह की नजदीकी का सबब हे.

---

१६. औलाद को कुरान मजीद पढाने की फजीलत

हुजुरﷺ ने फर्माया जो शख्स कुरान पाक पढे और उस्पर अमल करे, उस्के मां बाप को कयामत के दिन एक ताज पेहनाया जायेगा जिस्की रौशनी सूरज की रौशनी से भी ज्यादा होगी, अगर वो सूरज तुम्हारे घरो मे हो, तो तुम्हारा क्या ख्याल हे उस शख्स के बारे मे जो इस कुरान पर अमल करे. (अबू दावुद, मुआज अल जुहनी रदी)

जब मां बाप के लिये ये अजरो सवाब का जखीरा हे, तो खुद पढने वाले के अजर का अन्दाजा खुद ही कर लिया जाये कि कितने होगा, इसलिये कि जब तुफेली जो उस्के पीछे चलते हे उन्का ये हाल हे तो असल यानी खुद हाफीजे कुरान का हाल इस्से कयी गुना ज्यादा बेहतर होगा, और मां बाप को ये अजर सिर्फ इस वजह से हुवा कि वो इस्के वजूद या तालीम का सब्ब बने.

हुजुरﷺ ने फर्माया जो शख्स अपने बेटे को देखकर कुरान पाक पढना सिखलाये, उस्के सब अगले पिछले गुनाह माफ हो जाते हे, और जो शख्स हिफज कराये उस्को कयामत मे चौध्वी रात के चांद के जेसा उठाया जायेगा, और उस्के बेटे से कहा जायेगा कि पढना शुरू कर, जब बेटा एक आयत पढेगा बाप का एक दरजा बुलन्द किया जायेगा यहा तक कि इसी तरह पूरा कुरान पूरा हो. (तबरानी, अनस रदी)

---

१७. हाफीजे कुरान की अनोखी फजीलत

मेने हुजूरﷺ को ये फरमाते हुवे सुना कि अगर कुरान को किसी चमडे मे रख दिया जाये फिर उस्को आग मे डाला जाये तो ना जले. (दारमी, उक्बा बिन आमिर रदी)

हदीस की शरह करने वालो ने इस्के दो मतलब

बयान किये हे, कुछ लोगो के नजदीक चमडे से मुराद कौन सा भी चमडा हो, और किसी भी जानवर का हो, और आग से मुराद दुनिया की आग हे, इस सुरत मे ये एक खास मोजीजा हे जो हुजूर ﷺ के साथ खास था, जेसा कि दुसरे नबियो की मोजीजे उनके जमाने के साथ खास हुवे हे, दूसरा मतलब ये कि चमडे से मुराद आदमी का चमडा हे, और आग से मुराद जहन्नम की आग हे, इस सुरत मे ये हुक्म आम होगा किसी जमाने के साथ खास नही होगा, यानी जो शख्स कुरान का हाफिज हो अगर किसी जुरूम की वजह से उस्को जहन्नम मे डाला भी जायेगा तो उस्की आग इस पर असर नही करेगी, एक हदीस मे ये लफ्ज आया हे की आग उस्को छुयेगी भी नही, जो लोग कुरान मजीद के हिफज को फुजूल बतलाते हे वो अल्लाह के लिये इन फजीलतो पर गौर करे, येही एक फजीलत ऐसी हे कि जिस्की वजह से हर शख्स को हिफजे कुरान पर जान दे देना चाहिये, इसलिये कि कौन शख्स ऐसा होगा जिस्ने कोयी जुरूम ना किये हो और आग का मुस्तहिक ना हो.

हाफीजे कुरान को अपने खानदान के दस पक्के जहन्नमीयो की सिफारिश का हक होना- हुजूर ﷺ ने फरमाया जिस शख्स ने कुरान पढा फिर उस्को

हिफज किया, और उस्के हलाल को हलाल जाना, और हराम को हराम जाना, अल्लाह उस्को जन्नत मे दाखिल फरमायेगे, और उस्के घराने मे से दस ऐसे आदमियो के बारे मे उस्की शिफाअत कुबूल फरमायेगे जिन्के लिये जहन्नम वाजिब हो चुकी हो. (तिरमिजी, अली रदी)

---

१८. इस उम्मत के लिये फखर की चीज कुरान हे

आयशा रदी लोग अपने बाप दादा से और अपने खानदान से और बहुत सी चीजो से अपनी शराफत और बडाइ जाहिर किया करते हे, मेरी उम्मत के लिये फखर का जरिया कुरान शरीफ हे, इस्के पढने से, इस्के याद करने से, इस्के पढाने से, इसपर अमल करने से, गरज कि इस्की हर चीज फखर करने के काबिल हे, और क्यो ना हो, अल्लाह का फरमान हे, दुनिया का बडे से बडा शरफ भी इस्के बराबर नही हो सकता, और दुनिया के जितने भी कमालात हे, आज नही तो कल खतम होने वाले हे. लेकिन कुरान शरीफ का शरफ व कमाल कभी खतम होने वाला नही हे, दुनिया का हर कलाम चाहे वो कितना ही दिल को प्यारा मालूम हो, मजनू बना देने वाले मेहबूब का खत ही क्यो ना हो, दिन मे एक मरतबा पढने से दिल ना उकताये

तो दो मरतबा से, दो ना सही तो तीन से, तीन ना सही तो चार से तो उकता ही जायेगा, मगर कुरान शरीफ का एक रूकू याद कीजये, दो मरतबा पढये चार मरतबा पढये, उमर भर पढते रहिये, कभी नही उकतायेगा, बल्कि जितनी जियादा तिलावत करेंगे उतना ही ताजगी और लज्जत मे इजाफा होगा.

कुछ देर हमे भी अपनी हालत पर गौर करना चाहिये कि हम मे से कितने लोग हे जिन्को अपने हाफिजे कुरान होने पर फखर हे? या हमारी निगाह मे किसी का हाफिजे कुरान होना इज्जत का सब्ब हे, हमारी शराफत और और हमारे लिये फखर की चीज उची-उची डिगरिया बदे-बडे ओहदे, दुनिया का जाहो जलाल और मरने के बाद छुट जाने वाले मालो सामान से हे, तो अल्लाह ही से शिकायत हे. (एक हजार अनमोल मोती)